

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

Surah 73 — Al-Muzzammil (The Enshrouded One) · Meccan · 20 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ

ऐ (मेरे) चादर लपेटे रसूल

2

قُمْ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا

रात को (नमाज़ के वास्ते) खड़े रहो मगर (पूरी रात नहीं)

3

نِصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا

थोड़ी रात या आधी रात या इससे भी कुछ कम कर दो या उससे कुछ बढ़ा दो

4

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا

और कुरान को बाक़ायदा ठहर ठहर कर पढ़ा करो

5

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا

हम अनक़रीब तुम पर एक भारी हुक्म नाज़िल करेंगे इसमें शक़ नहीं कि रात को उठना

6

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا

खूब (नफ़्स का) पामाल करना और बहुत ठिकाने से ज़िक्र का वक़्त है

7

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْعًا طَوِيلًا

दिन को तो तुम्हारे बहुत बड़े बड़े अशग़ाल हैं

8

وَأَذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۚ

तो तुम अपने परवरदिगार के नाम का जिक्र करो और सबसे टूट कर उसी के हो रहो

9

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۚ

(वही) मशरिक और मगरिब का मालिक है उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो तुम उसी को कारसाज बनाओ

10

وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَأَهْجُرْهُمْ هَجْرًا ۚ جَمِيلًا ۚ

और जो कुछ लोग बका करते हैं उस पर सब्र करो और उनसे बा उनवाने शाएस्ता अलग थलग रहो

11

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُو۟لِيَ النِّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۚ

और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दौलतमन्द हैं समझ लेने दो और उनको थोड़ी सी मोहलत दे दो

12

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا ۚ وَجَحِيمًا ۚ

बेशक हमारे पास बेड़ियाँ (भी) हैं और जलाने वाली आग (भी)

13

وَطَعَامًا ۚ ذَا غُصَّةٍ ۚ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۚ

और गले में फँसने वाला खाना (भी) और दुख देने वाला अज़ाब (भी)

14

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا ۚ مَّهِيلًا ۚ

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ने लगेंगे और पहाड़ रेत के टीले से भुर भुरे हो जाएँगे

15

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا ۚ شَهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۚ

(ऐ मक्का वालों) हमने तुम्हारे पास (उसी तरह) एक रसूल (मोहम्मद) को भेजा जो तुम्हारे मामले में गवाही दे जिस तरह फिरऔन के पास एक रसूल (मूसा) को भेजा था

16

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا ۖ وَبَيَّا ۖ

तो फिरऔन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की तो हमने भी (उसकी सज़ा में) उसको बहुत सख्त पकड़ा

17

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا ۖ يَجْعَلُ الْوِلْدَنَ شِيبًا

तो अगर तुम भी न मानोगे तो उस दिन (के अज़ाब) से क्यों कर बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा

18

السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ ۚ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ ۚ مَفْعُولًا

जिस दिन आसमान फट पड़ेगा (ये) उसका वायदा पूरा होकर रहेगा

19

إِنَّ هَذِهِ ۚ تَذِكْرَةٌ ۚ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ ۚ سَبِيلًا

बेशक ये नसीहत है तो जो शरूष चाहे अपने परवरदिगार की राह एख्तेयार करे

[۱] إِنْ رَبِّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ [۲] وَثُلُثَهُ [۳] وَطَائِفَةٌ [۴] مِّنَ الَّذِينَ
 مَعَكَ [۵] وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ [۶] عِلْمَ أَنَّ لَّنْ تَحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ [۷] فَاقْرَأُوا [۸]
 مَا تيسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ [۹] عِلْمَ أَنَّ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ [۱۰] وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي
 الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ [۱۱] وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ [۱۲] فَاقْرَأُوا [۱۳] مَا
 تيسَّرَ مِنْهُ [۱۴] وَأَقِيمُوا [۱۵] الصَّلَاةَ وَآتُوا [۱۶] الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا [۱۷] اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا [۱۸] ا
 وَمَا تُقَدِّمُوا [۱۹] لِأَنفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ [۲۰] تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ [۲۱] وَأَعْظَمَ أَجْرًا [۲۲] ا
 وَأَسْتَغْفِرُوا [۲۳] اللَّهَ [۲۴] إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ [۲۵] رَّحِيمٌ [۲۶]

(ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार चाहता है कि तुम और तुम्हारे चन्द साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के करीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े रहते हो और खुदा ही रात और दिन का अच्छी तरह अन्दाज़ा कर सकता है उसे मालूम है कि तुम लोग उस पर पूरी तरह से हावी नहीं हो सकते तो उसने तुम पर मेहरबानी की तो जितना आसानी से हो सके उतना (नमाज़ में) कुरान पढ़ लिया करो और वह जानता है कि अनकरीब तुममें से बाज़ बीमार हो जाएँगे और बाज़ खुदा के फ़ज़ल की तलाश में रूए ज़मीन पर सफ़र एख्तेयार करेंगे और कुछ लोग खुदा की राह में जेहाद करेंगे तो जितना तुम आसानी से हो सके पढ़ लिया करो और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और ज़कात देते रहो और खुदा को कर्जे हसना दो और जो नेक अमल अपने वास्ते (खुदा के सामने) पेश करोगे उसको खुदा के हाँ बेहतर और सिले में बुर्ज़ुग तर पाओगे और खुदा से मग़फ़ेरत की दुआ माँगो बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है